आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : आठवां | दिसम्बर-2016

5

गुरुमत की समझ

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

7

रमत राम

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

31

अमृत वेला

संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71(राजस्थान) 98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04 व 99 28 92 53 04

उप संपादक : नन्दनी, **सहयोग** : भारती पोपली व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2016 –177– मूल्य – पाँच रुपये

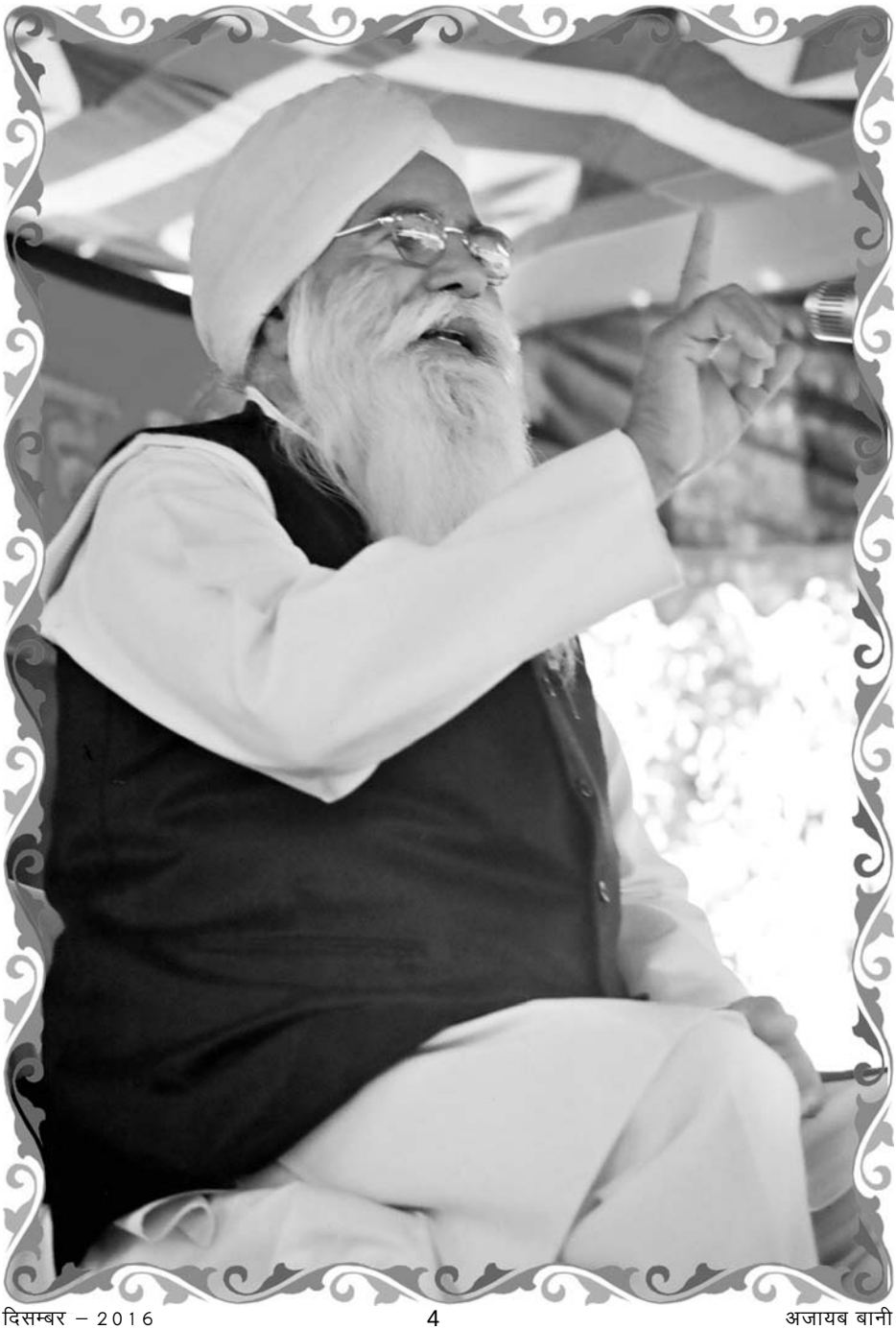

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

गुरुमत की समझ

गुरु अंगददेव जी के पास एक गुरुमुख प्रेमी ने आकर कहा कि क्या कोई ऐसा शिष्य है जो परमात्मा के भाणे को सही अर्थों में मानता हो? सब कुछ जानता हो कि क्या हो रहा है और क्या होने वाला है?

गुरु अंगददेव जी ने कहा कि गुजरात में हमारा एक सेवक भाई बुखारी है; तू उसके पास चला जा। गुरुमुख प्रेमी भाई बुखारी का पता पूछकर उसके घर पहुँचा। उस समय भाई बुखारी टाट का तप्पड़ सिल रहा था। गुरुमुख प्रेमी भाई बुखारी से राम-राम बोलकर वहीं बैठ गया। भाई बुखारी तप्पड़ की सिलाई में मस्त रहा। जब उसने तप्पड़ सिल लिया तो गुरुमुख प्रेमी से पूछा, ''हाँ भाई! कैसे आना हुआ? इस गरीब की कुटिया में आने का धन्यवाद!''

गुरुमुख प्रेमी ने कहा, ''मैं आपके दर्शनों के लिए आया हूँ।'' भाई बुखारी ने बताया कि मेरे लड़के की शादी है। ये मिठाइयां और शादी के कपड़े हैं, ये गहने हैं जो आने वाली लड़की को पहनाने हैं। सब कुछ दिखाने के बाद भाई बुखारी ने लकड़ी का फट्टा और सफेद कपड़ा दिखाकर कहा कि मेरा लड़का बहुत जल्दी गुजर जाएगा, उसे इस फट्टे पर डालकर ले जाना है।

गुरुमुख प्रेमी ने सोचा! जब इसे सब कुछ मालूम है तो यह लड़के की शादी ही क्यों कर रहा है? इस राज़ को देखा जाए कि कहाँ तक सच है! क्योंकि जो खुद बेविश्वासे होते हैं, वे दूसरों पर भी विश्वास नहीं करते।

समय आने पर बारात गई, लड़की वालों ने लड़की विदा की। हिन्दुस्तान में जो शादी का रिवाज है वह सब कुछ हुआ। जब घर आए तो एक दो दिन के बाद लड़के ने शरीर छोड़ दिया। लकड़ी का फट्टा और कफन तो पहले से ही तैयार था। उस लड़के का संस्कार कर दिया। हिन्दुस्तान में रिवाज है कि संस्कार के बाद घर आकर कपड़ा बिछाकर बैठते हैं; भाई बुखारी ने जो टाट का तप्पड़ तैयार किया हुआ था उसे बिछाकर बैठ गए।

किसी ने कहा, बहुत बुरा हुआ। अभी लड़के की शादी की थी, शादी पर बहुत खर्च हुआ। लड़का जवान था अगर मालिक ने ले जाना था तो पहले ही ले जाता। सबने अपनी-अपनी हमदर्दी की बोलियां बोली लेकिन भाई बुखारी चुप रहा।

गुरुमुख प्रेमी ने भाई बुखारी को एकांत में ले जाकर कहा, ''यह क्या कौतुक है? जब तुझे सब कुछ मालूम था, तूने कफन और नीचे बैठने के लिए तप्पड़ तक तैयार किया हुआ था फिर यह आडम्बर रचने की क्या जरूरत थी? तू अंदर जाता है। तूने इस वक्त को क्यों नहीं टाला? अगर तू खुद इस वक्त को नहीं टाल सकता था तो अपने गुरु अंगददेव के आगे विनती करता गुरु अंगददेव इस वक्त को टाल देते।''

भाई बुखारी ने हँसकर कहा, ''वह शिष्य नहीं, वह सतसंगी नहीं जो रूहानी कमाई को इन कामों के लिए इस्तेमाल करे या अपने गुरु से कहे कि मेरे इस दुःख को दूर कर। यह सिक्खी नहीं मतलब-परस्ती है, मतलब पूरा होते ही प्यार खत्म हो जाता है।''

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

रमत राम

गुरु नानकदेव जी की बानी | DVD-307 | मुम्बई

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपनी अपार दया करके इस आत्मा को शान्ति दी और जन्म–जन्मांतरों की तड़प को बुझाया।

प्यारेयो! सच्चा धन्यवाद तो अंदर जाकर ही होता है अगर हम बाहरी तौर पर धन्यवाद करते हैं तो यह भी अच्छा है। जो बाहर सच्चे दिल से अपना ऐब कबूल करता है वह ऐब छोड़ने की भी कोशिश करता है। जो बाहर धन्यवाद करता है वह अंदर जाकर भी तन–मन से धन्यवाद करने की कोशिश करता है। आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है:

घर रहो रे मन मुगध इयाने।। राम जपो अंतरगत ध्याने।।

गुरु नानकदेव जी महाराज हमें प्यार से कहते हैं, "परमात्मा ने हमारी आँखों के पीछे पर्दा लगाकर हमें बाहर निकाल दिया है और वह खुद बज्र का दरवाजा लगाकर अंदर बैठ गया है। हम जागते हुए भी बाहर हैं और सोते हुए सपनों में भी बाहर दौड़ते रहते हैं। हम जप–तप करते हैं बाहर तीर्थों पर जाते हैं इस तरह हमें भटकते हुए बेशुमार युग हो गए हैं लेकिन हमें आज तक अंदर जाने का साधन नहीं मिला।"

हम बाहर जो कर्म करते हैं उनके पाप तो अंदर चले जाते हैं लेकिन आत्मा अंदर नहीं जाती। सन्त प्यार से कहते हैं, "सभी पापों को बाहर निकालने की दवाई नाम है, सतगुरु का नाम सभी पापों की दवाई है; आप राम का नाम जपें।"

वह राम घट–घट के अंदर बसा हुआ है। वह धुन के रूप में हम सबके अंदर धुनकारे दे रहा है, यह बानी के रूप में है। गुरु नानकदेव जी ने उसे कहीं रब्बी बानी, कहीं धुर की बानी और कहीं हरिकीर्तन कहा है; आपने उस राम को जपना है। राम कोई लफ्ज़ नहीं, राम वह ताकत है जिसने सारी दुनिया की रचना पैदा की है।

लालच छोड रचो अपरंपर इयों पावो मुकत दुआरा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, "दुनिया का लालच छोड़ दें लालच बुरी बला है। हम लालच के वश होकर दुनिया का धन–दौलत इकट्ठा करते हैं महल–बंगले बनवाते हैं। यह लालच हमें यही बाँधकर रखता है। जब मौत आती है उस समय कुछ भी साथ नहीं जाता बल्कि हमने जो कुछ इकट्ठा किया होता है छोड़ते समय हम उस सबको देखकर रोते हैं।" कबीर साहब कहते हैं:

कामी, क्रोधी, लालची इनसे भक्ति ने होय।

लालची आदमी भक्तिभाव की तरफ आ ही नहीं सकता। इतिहास में आता है कि महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान पर 17–18 हमले किए, बहुत सा गनीमत का माल लूटकर अपने मुल्क ले गया। मौत किसी का लिहाज नहीं करती। जब मौत आती है उस समय मन अंदर से गवाही देता है कि तूने अपनी अनमोल जिंदगी व्यर्थ में खो दी।

महमूद गजनवी ने अपने अहलकारों को हुक्म दिया, "मैं जो कुछ भी लूट का माल हिन्दुस्तान से लाया हूँ इसे एक तरफ सजा दें ताकि मैं जाते हुए इस माल को देख लूं।" जब सारा सामान सजा दिया गया तब पालकी में बैठकर महमूद गजनवी उस सामान को देखकर दहाड़े मारकर रोने लगा कि मैंने इस धन–दौलत के लिए लाखों औरतों को

विधवा कर दिया, लाखों बच्चों को यतीम कर दिया लेकिन आज यह धन–दौलत मेरे साथ नहीं जा रहा है, मेरे सिर पर पापों का बोझ है। महमूद गजनवी ने अपने अहलकारों से कहा कि मेरे हाथ कफन से बाहर रखना, हथेलियां नीचे की तरफ कर देना और यह नारा लगाना:

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

मेरे साथ जो कुछ भी होगा उसे तो मैं भुगतूंगा ही कम से कम दुनिया यह सीख ले कि जब महमूद गजनवी इस दुनिया से गया तब उसके दोनों हाथ खाली थे।

कबीर साहब कहते हैं, "इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर संसार से चला जाता है।" गुरु नानक साहब कहते हैं कि आप सबसे पहले लालच छोड़े। शुरू–शुरू में हमें कोशिश करनी पड़ती है जब हम जुबान से लालच छोड़ देंगे अगर हम इसके साथ–साथ नाम की कमाई करते हैं तो हमें अंदर से भी मदद मिलती है और धीरे–धीरे हमारी विचारधारा बदलनी शुरू हो जाती हैं।

जिस बिसरिऐ जम जोहण लागै।। सभ सुख जाहें दुखा फुन आगै।

आप कहते हैं, "राम को भूलने से यम हमें इस तरह देखता है जिस तरह बिल्ली चूहे की तरफ देखती है, बाज चिड़िया की तरफ देखता है, चीता अपने शिकार के ऊपर झपट्टा मारता है इसी तरह काल हमारे पीछे लगा होता है। पता नहीं! किस जगह हमारा एक्सीडेंट हो जाना है, कब सोते हुए हार्टफेल हो जाना है, कब हवाई जहाज के किसी पुर्जे में खराबी आ जाने पर हवाई जहाज ने जमीन पर आ गिरना है। हम काल को भुला देते हैं लेकिन काल हमें नहीं भूलता। राम को भूलने से दुख ही दुख हैं; सुखों का दाता वह राम परमात्मा है।"

राम नाम जप गुरमुख जीअड़े एह परम तत्त वीचारा हे।

सभी सन्तों ने यह विचार किया है कि आप गुरुमुखों के जरिए उस राम को जपें। गुरुमुख हमें बताएंगे कि हमने किस तरह **रमत राम** के साथ जुड़ना है, राम लफ्ज नहीं। गुरु साहब बानी में बताते हैं:

राम राम सबको कहे कहेयां राम ना होए।
गुरु प्रसादी राम मन बसे तां फल पावे कोए।।

कोई महात्मा कृपा करे हमें उस **रमत राम** के साथ जोड़े तो हम उस राम के साथ मिलकर मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। नर की संगत में आकर तोता भी राम–राम कहना सीख जाता है लेकिन उसे राम के महत्त्व का पता नहीं होता। जब वह तोता उड़कर जंगल में जाता है तब राम का ध्यान भूल जाता है। इसी तरह हम मुँह से राम–राम, अल्लाह–अल्लाह, वाहेगुरु–वाहेगुरु करते हैं लेकिन जब हम विषय–विकारों, शराबों–कबाबों के जंगल में जाते हैं तो हमने जो कुछ पढ़ा होता है वह सारा ज्ञान–ध्यान भूल जाते हैं।

हर हर नाम जपो रस मीठा।। गुरमुख हर रस अंतर डीठा।।

आप प्यार से कहते हैं, "हरि का नाम सब रसों से मीठा है इसे महारस कहकर भी बयान किया गया है। हमारा मन लज्जत का आशिक है **आज** तक यह किसी लज्जत पर नहीं रुका।" जिन प्रेमियों से हमारा सारी जिंदगी लगाव रहता है कभी ऐसा वक्त आता है कि वे हमें अंदर से खुष्क नजर आने लगते हैं।

हम खाना खाते हैं अगर उससे भी अच्छा खाना मिले तो हम उस तरफ दौड़ने लगते हैं। इसी तरह हमारा मन एक लज्जत को छोड़ता है तो दूसरी लज्जत की ओर लग जाता है लेकिन जब हमें अंदर

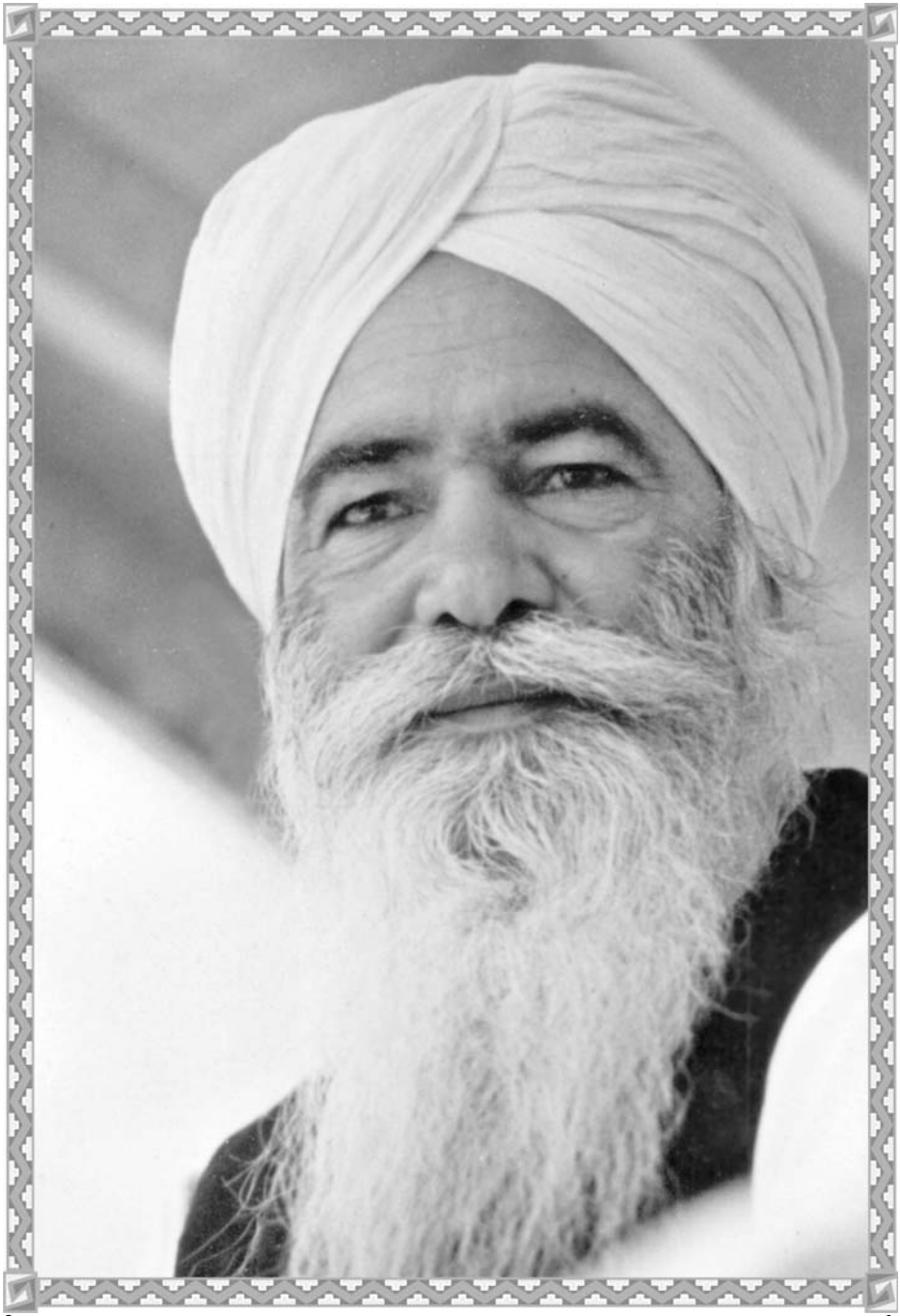

जाकर वह नाम का रस, हरि का रस, राम का रस मिल जाता है तो बाकी सब रस खुद ही छूट जाते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

नौं दर धावत नवे दर फीके।

हमारी दो आँखें, दो कान, दो नाक के सुराख, मुँह और नीचे की इन्द्रियों के दो सुराख है इनकी लज्जतें फीकी हैं। हमारी आत्मा के ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे हैं,आत्मा तोता इनमें कैद है। आप ये तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार पारब्रह्म में पहुँचें।

अमृतरस सतगुरु चुआया, दसवें द्वार प्रकट होय आया।

हम बाहर जितनी भी कोशिश कर लें आज तक वह अमृत का रस न किसी को मिला है और न मिल ही सकता है। वह मीठा रस सन्तों की सभा में मिलता है। सन्तों ने अंदर जाकर खुद उस रस को चखा होता है और वे हमें वही युक्ति बताते हैं कि हम अंदर जाकर किस तरह उस रस को चख सकते हैं, दुनिया की लज्जत को छोड़ सकते हैं। यह रस इतना मीठा है इतना स्वाद है कि फिर हमें दुनिया के सभी रस फीके नजर आने लगते हैं।

अहनिस राम रहो रंग राते एह जप तप संजम सारा हे।।

जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह पारब्रह्म में पहुँचकर हमारी वृति अखंड वृति हो जाती है फिर चाहे हम सो रहे हैं चाहे जाग रहे हैं वहाँ से हमारी वृति नहीं टूटती।

मुख की बात सगल स्यों करदा जीव संग प्रभ अपने घर दा।

वह दुनिया से बातें भी करता है लेकिन उसकी तार अंदर से उस जगह जुड़ी होती है जैसे रहट और कुआँ अलग होता है खींचने

वाले बैल अलग होते हैं लेकिन उस धुरे का लठ के साथ मिलाप होता है। इसी तरह जो पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं उनकी लिव शब्द के साथ जुड़ जाती है जहाँ वे अमृत पीते हैं तब दुनिया के रस अपने आप ही फीके नजर आने लगते हैं।

राम नाम गुरबचनी बोलो।। संत सभा मह एह रस टोलो।।

आप प्यार से कहते हैं, "जब हम वहाँ पहुँच जाते हैं जप, तप, संयम सब इसके बीच में आ जाते हैं; जैसे हाथी के पाँव में सबका पाँव। जब हम अपनी आत्मा से सभी पर्दे उतारकर वहाँ पहुँच जाते हैं तब हमारा जप, तप, पूजा–पाठ और सयंम सब कुछ ही हो जाता है।"

नन्ना नाहे भोग नित भोगे, ना डिट्ठा न संभलया।
गल्ली हों सुहागण बहने कंत न कबहु मैं मिलया।।

आप कहते हैं, "हम अपने आप उस नाम के साथ उस राम के साथ नहीं जुड़ सकते। कहीं दिल में ख्याल हो कि महात्मा और वेद–शास्त्र जिस **रमत राम** की और नाम की महिमा करते हैं कि वह हमारे शरीर में है तो उसे जपना क्या मुश्किल है?"

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "अगर नाम लफ्ज होता किसी किताब से लेकर जपा जा सकता तो पाँच साल की लड़की भी नाम दे सकती थी, राम एक ताकत है। सन्त नाम के भंडारी बनकर आते हैं। आदि कर्ता परमात्मा जिनके मस्तक में लिख देता है उन्हें ही सन्तों की सभा प्राप्त होती है।" गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सन्त सभा कोट गुरु पूरे, धुर मस्तक लेख लिखाए।

जब तक परमात्मा कृपा नहीं करेगा हम सोचते ही रह जाएंगे वहाँ जा ही नहीं सकेंगे अगर वहाँ चले भी जाएंगे तो कोई अभाव ले आएंगे।

वहाँ जाकर सो जाएंगे या इधर–उधर की बातें करके टाईम पास करेगें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ओह वल छल कर झट लंघाऐ दे।
ओहना रिजक न पाया ओत्थे ओहना होरो खाना।।

वहाँ निन्दा–चुगली नहीं होती, शराब के दौर नहीं चलते इसलिए उन्हें वहाँ पर अच्छा नहीं लगता। सन्तों की सभा में ऐब छोड़ने, नाम जपने का उपदेश है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जन नानक कंत रंगीला पाया ते फिर दूख न लागे आए।।

हमारी आत्मा को पति मिल जाता है वह सारे सुखों का दाता है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है वह जो चाहे सो कर सकता है। परमात्मा जड़ को चेतन और चेतन को जड़ बना सकता है। परमात्मा मूर्ख को ज्ञानी और ज्ञानी को मूर्ख बना सकता है।

परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और दुखों की नाशक है, यह सच्चे अमृत की दाता है। वे जीव धन्य हैं जो परमात्मा की भक्ति करते हैं। परमात्मा के भक्त परमात्मा से बढ़कर होते हैं लेकिन ऐसे प्यारों की संगत हमें तभी प्राप्त होती है जब धुर मस्तक में लेख लिखा हो। जो परमात्मा की भक्ति करते हैं परमात्मा उन्हें भक्ति की दात देता है।

गुरमत खोज लहो घर अपना बहुड़ न गरभ मंझारा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, "पता नहीं! दुनिया कब की बनी है। हम कब से इंसान बने हैं फिर भी माता के पेट में जाना पड़ता है। मौत आती है तो भी गर्भ में जाना पड़ता है अगर पशु पक्षी हैं तब भी हमें धर्मराज के सामने पेश होना पड़ता है, धर्मराज के दूत लेने आते हैं।"

आप कहते हैं, "आज तक आप अपने घर नहीं गए, आपका मन आपको बाहर ही बाहर लिए फिरता है। हम अपने घर कैसे जा सकते हैं? हम अपनी मत छोड़कर अपने घर जा सकते हैं। अपनी मत क्या है? जो दिल में आया कर लिया। मन के कहने पर शराब पी ली। मन के कहने पर किसी के साथ लड़–झगड़ लिए। मन ने कहा तो विषय भोग लिए, मन ने जो कहा वह कर लिया। **पाप करने की अवधि तो थोड़ी होती है लेकिन इसकी सजा बहुत लम्बी होती है।** आप अपने मन की मत छोड़ दें, गुरमुखों की मत पर चलें क्योंकि गुरुमुख रोज उस घर के अंदर आते–जाते हैं।" भाई गुरदास जी कहते हैं:

गुरुमुख गाड़ी राह चलांदा, गुरुमुख आए जाए निसंग।

गुरुमुखों का रास्ता बना होता है। जो काम आप रोज करते हैं उसमें महारत हो जाती है। गुरु हर रोज आता–जाता है। आप अपने मन की मत छोड़कर गुरु की मत पर चलें, गुरु के पीछे लगें। वह रोज जाता है आपको भी ले जाएगा। जो उनके साथ जाने के लिए तैयार है वह उन्हें ले जाता है जिसकी कोई फीस नहीं लगती, वह आपके ऊपर कोई अहसान भी नहीं करता। अगर आप नाम लेकर मन के पीछे लगकर शराब पीते हैं बुरे कर्म करते हैं अपनी औरत को छोड़कर पराई औरतों के साथ विषय भोगते हैं। एक औरत के लिए धर्म का पालन करना जितना जरूरी है उतना ही एक आदमी के लिए भी जरूरी है। भाई गुरदास जी कहते हैं:

देख पराईयां चंगियां धीयां भैणां मावां जाणे।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

पर त्रिया रूप न पेखे नेत्र, साध की टहल सन्त संग हेत।
कर्ण न सुने काहूं की निन्दा, तो सबसे जाणें आपस को मंदा।।

ऋषि–मुनि मन के पीछे लगे तो पुराणों में उनका मजाक उड़ाया गया लेकिन कभी किसी परम सन्त का मजाक नहीं उड़ाया गया। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी के बीच में है। मन त्रिकुटी का रहने वाला है। पाँचो डाकू मन का परिवार हैं ये मन की फौज हैं। जब ये पाँचों डाकू मन का राज्य छोड़ देंगे तो मन क्या करेगा?

आपको बार–बार माँ के पेट में न आना पड़े, मौत का सामना न करना पड़े और धर्मराज के सामने पेश न होना पड़े। जब हम अपनी मत छोड़कर गुरु की मत पर चलते हैं तब गुरु ही हमें लेने के लिए आएगा अगर गुरु लेने के लिए नहीं आता तो ऐसे गुरु के पास जाने का क्या फायदा? ऐसे गुरु को दूर से ही राम–राम बोलना अच्छा है अगर हम नाम लेकर बुरे काम करते हैं सोचकर देखें! गुरु ने किसी से कोई कर्ज तो नहीं लिया? कि गुरु आए और हम कोई पाप न छोड़े।

सच तीरथ नावो हर गुण गावो।। तत वीचारो हर लिव लावो।।

गुरु नानक साहब उसे कहीं अंदर का तीर्थ कहीं अमृतसर और कहीं सेतसुन्न भी कहते हैं। आप अंदर जाकर अपनी आत्मा को वहाँ स्नान करवाएं।

अंत काल जम जोह न साकै हर बोलो राम प्यारा हे।।

अगर आपका गुरु के साथ प्यार है और गुरु ने आपका प्यार राम के साथ लगा दिया है तो काल आपके नजदीक नहीं आ सकता। मेरे पास बहुत से प्रेमियों के पत्र आते हैं और वे मुझे मिलकर भी बताते हैं कि जिनके घर में सतसंगी हैं लेकिन मौत वाले को नाम नहीं मिला तो वे उस मौत वाले की गवाही देते हैं कि हमने वहाँ पर गुरु की

मौजूदगी महसूस की। कोई कहता है कि मैंने अपनी आँखों से गुरु को उसकी संभाल करते हुए देखा। आमतौर पर गुरु और सेवक के बीच ऐसे वाक्य होते रहते हैं लेकिन मौत के समय कोई बेसतसंगी पास नहीं होना चाहिए नहीं तो गुरु चुप करके चला जाएगा।

जो लोग भजन–सिमरन करते हैं वे कई दिन पहले ही बता देते हैं। सतगुरु की इजाजत नहीं होती कि आप इन चीजों की नुमाईश करें। हमारी आत्मा को शरीर में से गुरु निकाले या यमराज निकाले। जिन लड़को ने अपने गुरु को संभाल करते हुए देखा होता है वे जब मिलते हैं तो कहते है, "हमारी माँ को कुछ देर के लिए और छोड़ देना था।" साथ ही आँखों से पानी भी निकालते हैं।

महाराज सावन सिंह जी के समय अमृतसर का एक वाक्या है। वहाँ एक सतसंगन लड़की थी। उस लड़की ने कहा, "मैंने आज से आठवें दिन शरीर छोड़ देना है।" मौहल्ले में किसी को नाम नहीं मिला था। लोगों ने कहा यह कोई योगी है? मौहल्ले वाले दिन गिनने लगे आखिर आठवें दिन उस लड़की ने शरीर छोड़ दिया। जब महाराज सावन अमृतसर गए तब सारा मौहल्ला नाम लेने के लिए तैयार हो गया। महाराज जी ने कहा, "आप लोग अच्छी तरह पक्के हो जाओ।"

हमारे यहाँ एक प्रेमी सेवा करने आता तो उसके रिश्तेदार हमेशा ही उसे ताने–महणें देते कि आप सारा दिन आश्रम में चले जाते हैं घर का कोई कारोबार नहीं करते। उसकी पत्नी को दमें की शिकायत रहती थी लेकिन वह हमेशा ही उसकी मदद करती अगर उसे दमें का दौरा पड़ता तब बेशक उसने अपने पति को लेट किया हो नहीं तो वह कहती आपकी सेवा में रूकावट न आए आप सेवा पर जाएं।

उस औरत का एक भाई बेसतसंगी था। उस औरत ने कहा कि कार आ गई है महाराज जी आ गए हैं, वे पीरों के पीर हैं। उसका दूसरा भाई उसके पति को लेने के लिए आया, उसके चेहरे पर बिल्कुल भी उदासी नहीं थी। उस समय हम खेत में लकड़ी काट रहे थे। आप सोचकर देखें! जवान बहन छोटे–छोटे बच्चे छोड़ जाए भाई के चहरे पर उदासी न हो। वे जब क्रियाक्रम करके मेरे पास आए तो उन्हें कोई उदासी नहीं थी, उन्होंने सब कुछ बताया। जो लोग ताने–मेहणे देते थे अब वे भी सेवा में आने लग गए हैं।

सच को सबूत की जरूरत नहीं। कोई गुरु के कहे मुताबिक करके देखे! हम डॉक्टर से दवाई लाकर उसे अलमारी में रख दें और डॉक्टर को गालियां देते रहें तो इसमें डॉक्टर का क्या कसूर है?

सतगुर पुरख दाता वडदाणा।। जिस अंतर साच सो शबद समाणा।।

सतगुरु सबसे बड़ा दाता है। वह बहुत स्याना है उसके अंदर नाम का खजाना है, परमात्मा ने उसे शब्द का भंडारी बनाया है। सतगुरु के बराबर कोई दान नहीं कर सकता। कोई कुआँ खुदवाता है कोई सराय बनवाता है कोई यज्ञ करवाता है कोई तप करवाता है ये सब चीजें हमें बाहर की तरफ रखती हैं हमारे साथ नहीं जाती। सतगुरु जो दात देता है वह अनमोल है, यह हमारे साथ जाती है। इस दात को चोर चुरा नहीं सकता, ठग ठग्गी नहीं मार सकता, आग जला नहीं सकती। नाम के बिना हमारा कोई संगी–साथी नहीं।

जिस कौ सतगुरु मेल मिलाए तिस चूका जम भै भारा हे।।

सतगुरु दया करके जिसे शब्द के साथ राम के साथ मिला देता है उसका आना जाना भूतों की तरह चक्कर लगाना खत्म हो जाता है।

पंच तत्त मिल काया कीनी।। तिस मह् राम रतन लै चीनी।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि यह शरीर हवा, मिट्टी, पानी, आग और आकाश पाँच तत्वों का बना हुआ है। ये पाँचों तत्व एक दूसरे के विरोधी हैं लेकिन आत्मा होने की वजह से इस शरीर की शोभा है। बहन–भाई, यार–दोस्त हमारा आदर करते हैं। आत्मा परमात्मा की अंश है। जब यह आत्मा शरीर में से उड़ जाती है आग आग में जाकर मिल जाती है। पानी पानी में जाकर घुल जाता है। मिट्टी मिट्टी में जाकर घुल जाती है। आकाश आकाश में जाकर मिल जाता है तब हम मिट्टी की एक ढ़ेरी बनकर पड़े होते हैं। आँखें होती हैं लेकिन रोशनी नहीं होती। टांगे होती है लेकिन टांगे हरकत नहीं करती, यह शरीर डायन की तरह डरावना हो जाता है।

सन्त कहते हैं प्यारे बच्चो! आपके अंदर इतनी कीमती चीज है जिसकी वजह से आपकी इतनी रौनक है। परमात्मा ने कृपा करके आपके शरीर के अंदर वह चीज रखी हुई है, आप उसे उसके भंडार में मिलाएं। सतगुरु न कोई कौम बनाने के लिए आते हैं न दुनिया के पदार्थ इकट्ठा करने के लिए आते हैं। वे तो हमारी आत्मा को उस परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।

इसमें हिन्दु, मुसलमान, अमेरिका, अफ्रीका, हिंदुस्तान, यूरोप या किसी भी इलाके में रहने वाले का सवाल नहीं। सबके अंदर एक ही आत्मा है। एक ही तरह से पैदाईश होती है और एक ही तरीके से मौत आती है, सबमें एक ही जैसा खून पसीना होता है।

गुरु गोविंद सिंह जी महाराज कहते हैं कि हम सबके एक जैसे ही नैन और बैन हैं। महात्मा यहाँ जाति–पाति बनाने के लिए नहीं आते। वे हमारी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। हम कहते हैं कि हमें किसी सन्त या गुरु के पास जाने की जरूरत नहीं। प्यारेयो! गुरु नानकदेव जी के गुरु ग्रंथ साहब में जगह–जगह गुरु गुरु ही लिखा है। आप कहते हैं:

गुरु कुंजी पाहु निवल मन कोठा तन छत।
नानक गुरु बिन मन का ताक न उघड़े अवर न कुंजी हत्थ।।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि जब तक गुरु चाबी नहीं लगाता तब तक हमारे मन का वज्र दरवाजा नहीं खुलता। परमात्मा हमेशा ही चाबी वाले महात्मा को संसार में भेजता है। महात्मा के बिना संसार खाली नहीं रह सकता। कबीर साहब कहते हैं:

अग्नि लगी आकाश को झड़ झड़ पैण अंगियार।
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, "सच्चाई का बीज नाश नहीं होता।" परमात्मा हमेशा अपने प्यारों को संसार में भेजता है। अब सूरज चढ़ा है अगर उल्लू सूरज नहीं देखते तो इसमें सूरज का क्या कसूर है? महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा महात्मा चतुरदास थे। महात्मा चतुरदास ने अपनी किताब में लिखा है:

ईक दिन सभा उल्लुआं लाई, बैठे मिल नर नारी जी।
कोई आखे सूरज नाहीं, कौन करे उजियारी जी।
वोरो वारी सभी बोले कर कर सोच विचारी जी।
ओन्हां विच ईक वड्डा उल्लु बानी ओस उचारी जी।
अज तक सूरज हम नहीं डिट्ठा वड्डी उम्र हमारी जी।
जे कोई सूरज सच्चा आखे अकल ओस दी मारी जी।
एक हंस टीसी पर बैठा बानी ओस उचारी जी।
है प्रभात देख लो सारे लक्खां किरण पसारी जी।
चतुरदास ऐह अजब अदालत तीन लोक से न्यारी जी।।

सभी पढ़े–लिखे इकट्ठे होकर कहते हैं कि परमात्मा है ही नहीं। बाकी पढ़े–लिखे भी इस बात की गवाही देते हैं कि हमने बड़ी किताबें पढ़ी हैं। ज्यादा पढ़े–लिखो को यहाँ पर बड़ा उल्लु कहा गया है। वहाँ पर कोई मालिक का प्यारा भक्त भी बैठा था उसने कहा, "प्यारेयो! परमात्मा आपके अंदर है। परमात्मा ने आपको जीवन दिया है। परमात्मा के अंदर होते हुए भी हम समझ नहीं पाते।"

पप्पू मेरे साथ ही बैठा है हम कनाडा गए। वहाँ एक हिंदुस्तानी प्रोफेसर आया उसका यही रोब था कि मैं प्रोफेसर हूँ। मैं लाहौर में पढ़ा हूँ। पहले उसने मेरे साथ पंजाबी में बात की फिर पंद्रह बीस मिनट पप्पू के साथ इंग्लिश में बातें की। मेरे पास इतना समय नहीं था लेकिन मैंने कहा कि इसे आराम से सुनें। वह बोलता ही रहा और मैं चुप रहा। जब मैंने उसकी तरफ जरा सा खामोशी से देखा तो वह रोने लगा।

मैं वहाँ आठ दिन रहा। वह जाकर अपनी पत्नी को भी ले आया। वह हर रोज प्यार से सतसंग सुनता रहा। मैंने उससे एक ही बात कही, "प्यारेया! पेड़ का फल खाने से पता लगता है, पहले फल खाओ यह किताबों की चीज नहीं।" गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

वेद कतेब न भेद लिखयो जो गुरु ने गुर मोहे बतायो।

मुझे गुरु से जो भेद मिला है वह वेद–शास्त्रों से नहीं मिला। गुरु गोविंद सिंह जी बहुत पढ़े–लिखे थे, आप फारसी के माहिर सन्त हुए हैं। आपको अंदर और बाहर दोनों तरह का ज्ञान था। आप भी किसी वेद–शास्त्र से सीख सकते थे। वेदों–शास्त्रों में इसकी महिमा लिखी हुई है जिस तरह साहूकार की बही में रूपयों का ब्यौरा लिखा होता है लेकिन उसमें रूपये नहीं होते, रूपये तो तिजोरी में होते हैं। जो बही चुराकर ले जाएगा क्या उसे रूपये मिल जाएंगे?

इसी तरह वेद–शास्त्र परमात्मा की महिमा करते हैं, परमात्मा से मिलने के फायदे बताते हैं। वेद–शास्त्र उन महात्माओं के लिखे हुए हैं जो परमात्मा रूप थे, जिन्होंने परमात्मा को प्राप्त किया हुआ था। वे वेदों–शास्त्रों में हमारे लिए जो हिदायतें लिखकर गए हैं हमारा फर्ज है कि हम उनकी हिदायतों पर चले। कबीर साहब कहते हैं:

वेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।

वेद–कतेब झूठे नहीं, वेद–कतेब सच कहते हैं। अब सवाल यह है कि हम क्या करते हैं? इनको पढ़ लिया लेकिन समझे नहीं।

आतम राम राम है आतम हर पाईऐ शब्द वीचारा हे।

आप प्यार से कहते हैं, "आत्मा परमात्मा की अंश है। हम शब्द–नाम की कमाई से ही आत्मा और परमात्मा के भेद को दूर कर सकते हैं। बीज में पेड़ है और पेड़ में बीज है। जब तक यह अलग है तब तक

ही यह आत्मा है जब यह बीच में मिल जाती है यह राम बन जाती है परमात्मा बन जाती है।"

सत संतोख रहो जन भाई।। खिमा गहो सतगुर सरणाई।।

आप कहते हैं, "गुरु के चरणों में सच लेकर आएं, संतोष लेकर आएं; क्षमा धारण करें। संगत सुनने का यही फायदा है कि हम सब्र करने वाले बनें परमात्मा जो देता है उसमें सब्र करें। अहंकार न करें अहंकारी को परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता। सतगुरु की शरण में जाने से पहले शराब–मीट और बुरे कर्म करना छोड़ें दें। क्षमा का श्रृंगार करें ताकि दूसरों को पता चले ये किसी सन्त के सेवक हैं।"

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "पीर नहीं उड़ते उन्हें सेवक उड़ाते हैं। सेवक जितने अच्छे होंगे उतने ही ज्यादा लोग सन्त से फायदा उठाएंगे। आप संगत में आते हैं संतोष, क्षमा धारण करें और अहंकार को जगह न दें।"

आतम चीन परातम चीनों गुर संगत एह निसतारा हे।।

गुरु की संगत में जाने का यही फायदा है कि आप 'शब्द–नाम' की कमाई करें।

साकत कूड़ कपट मह टेका।। अहनिस निंदा करेंह् अनेका।

आप कहते हैं अगर साकत सन्तों की संगत में आ जाए चाहे वह नाम भी ले ले फिर भी वह निन्दा–चुगली करने की आदत नहीं छोड़ता। सन्त बहुत प्यार से समझाते हैं कि पापी की निन्दा करना भी बुरा है अगर हम किसी नामलेवा की निन्दा करेंगे तो कौन से नर्क में जाएंगे? आप किसी की निन्दा न करें। किसी समाज के लिए बुरा ख्याल न करें अगर कोई बुराई करता है तो वह अपने लिए ही करता है और उसका लेखा–जोखा उसने खुद ही भुगतना है।

अगर कोई आपके पास आकर विनती करता है कि मुझसे बुरा कर्म हो गया मुझे कोई उपाय बताएं ताकि मैं इसे छोड़ सकूं। आपको उसे नेक राय देनी चाहिए लेकिन हम उसकी भी निन्दा करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "आप जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप आपके खाते में जमा हो जाते हैं और आपके पुण्य उसके खाते में जमा हो जाते हैं।" गुरु नानक साहब कहते हैं:

निन्दया भली काहूँ की नाहीं मनमुख मुगध करन।
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन।।

बिन सिमरन आवेंह् फुन जावेंह् गरभ जोनी नरक मंझारा हे।

निन्दक को यह सजा मिलती है कि वह आता है जाता है। पैदा होता है और मरता है ।

तिस अपराधी गत नहीं काई।

साकत जम की काण न चूकै। जम का डंड न कबहूं मूकै।।
बाकी धरमराय की लीजै सिर अफरयो भार अफारा हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज हमें डराने के लिए नहीं लिखते। उन्होंने जो आँखों से देखा है वही बताया है:

नानक दास मुख ते जो बोले ईहाँ उहाँ सच होवे।

जो सतसंग में आकर निन्दा, अपराध, शराब और बुरे कर्म नहीं छोड़ता वह यम के दंड से बच नहीं सकता। जब धर्मराय के पास पेश होता है तब धर्मराय उसका ईमालनामा उसके आगे रख देता है कि तूने यह किया है अब तू इसे भुगत। वह जिस सजा का अधिकारी होता है धर्मराय उसे उस योनि में भेज देता है।

बिन गुर साकत कहो को तरया। हौमे करता भवजल परया।

गुरु नानकदेव जी बहुत ठोक बजाकर कहते हैं कि हमें कोई आकर बताए तो सही कि आज तक कोई गुरु के बिना पार हुआ है? जब से यह दुनिया बनी है परमात्मा ने यह कानून ही बना दिया है:

मत कोई भरम भूले संसार, गुरु बिन कोई न उतरस पार।

कबीर साहब तो यहाँ तक लिखते हैं:

कबीर निगुरा न मिले पापी मिले हजार।
ईक निगुरे की पीठ पर लख पापों का भार।।

बिन गुर पार न पावै कोई हर जपीऐ पार उतारा हे।

जो लोग यह कहते हैं कि हम गुरु के बिना मुक्त हो जाएंगे, यह इस तरह है जैसे कोई जहाज के बिना समुंद्र पार करना चाहता है।

गुर की दात न मेटै कोई। जिस बखसे तिस तारे सोई।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि गुरु जिसे नाम का परवाना दे देते हैं धर्मराय उसे रोक नहीं सकता, वह परवाना दिखा देता है। उसे कोई जन्म–मरण में नहीं डाल सकता, वह बख्शा हुआ होता है। जिसकी बादशाह के साथ दोस्ती है बादशाह उसे टिकट दे देता है कि प्यारेया! तू अहलकारो को यह टिकट दिखा देना वे तुझे नहीं राकेंगे, वह नाम का परवाना है।

जनम मरण दुख नेड़ न आवै मन सो प्रभ अपर अपारा हे।

मैं कई बार सुंदरदास की बात बताया करता हूँ। यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने मिस्टर ओबराय की किताब पढ़ी है, उसमें भाई सुंदरदास का संवाद छपा हुआ है। वह संवाद सैंकड़ो लोगों के सामने हुआ था। सच्चे पातशाह महाराज कृपाल ने सुंदरदास की आँखें बंद

करवाकर उसे अंदर का हाल दिखाया था कि किस तरह नर्क में जीव कुरला रहे हैं और किस तरह झूठे गुरुओं की हालत हो रही है। सुंदरदास आँखें खोलकर सब कुछ बताता था।

सुंदरदास अच्छा मजबूत आदमी था। वह महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए पैदल ही जाता था। किसी ने उससे कहा कि तू साईकिल चलाना सीख ले धर्मराय को जाकर क्या बताएगा? सुंदरदास ने कहा, "मेरा धर्मराय के साथ क्या काम? मेरा गुरु सावन सिंह है मैंने उसके पास जाना है वह खुद आएगा।"

जब सुंदरदास का अन्त समय आया उसने छह महीने पहले ही मुझसे कहा कि मेरे बाद किसी को कुछ नहीं खिलाना, जो खिलाना है अभी खिला दें और मैं भी खा लूं। उसने छह महीने पहले ही अपने कपड़े भी बनवा लिए थे। हुजूर सच्चे पातशाह की दया से जब उसका अंत समय आया तो उसने कहा कि अब प्रशाद बनवा लें। उस समय 77 आर. बी. के कुछ प्रेमी मेरे पास आए हुए थे, मैंने उनसे कहा कि तुम लोग प्रशाद तैयार करो सुंदरदास जा रहा है।

सुंदरदास ने बताया कि बाबा जयमल सिंह जी महाराज सावन सिंह जी आए हैं। सुंदरदास पर महाराज सावन सिंह जी की झलक पड़ती थी। वह छह फुट लम्बा था और उसकी नाक भी महाराज सावन सिंह जी जैसी थी। प्यारेयो! हम जीते जी कह सकते हैं कि हमारा धर्मराय से क्या वास्ता?

गुर ते भूले आवो जावो। जनम मरो फुन पाप कमावौ।

हम यहाँ बैठे हैं इसका यही सबूत है कि हमें किसी भी जन्म में गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। हम गुरु को भूलकर लापरवाही में रहे

इसलिए आज हम इस अशान्त दुखों की नगरी में हाजिरी लगवाने के लिए आए हैं। हम जन्मते रहे हैं, मरते रहे हैं। जहाँ जन्म लिया वहाँ पापों की गठरी बांध ली उन पापों को भुगतने के लिए फिर आ गए।

साकत मूड़ अचेत न चेतेह् दुख लागै ता राम पुकारा हे।

आप कहते हैं कि साकत का दिल काले कंबल की तरह होता है। परमात्मा ने अपार दया करके इंसान का शरीर दिया है और खाने के लिए कितनी ही नियामते दी हैं फिर भी यह मुन्कर होकर बैठा है। जब कोई दुख आता है तो यह भजन पर बैठता है। कहता है पाठ भी करवाओ। दुख आने पर राम को पुकारता है। कबीर साहब कहते हैं:

सुख में सिमरन न किया दुख में किया याद।
दुखी होय दास की कौन सुने फरियाद।।

गुरु नानक साहब कहते हैं अगर कोई कत्ल करके मेजिस्ट्रेट के सामने पेश होकर कहे कि अब मुझे माफ कर दें मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा। मेजिस्ट्रेट प्यार से यही कहेगा कि यह सजा तो भोग ले आगे से मत करना। जब संभलने का समय था तब तो लापरवाह रहा जब दुख की चोट लगी तो भजन करने लगता है।

सुख दुख पुरब जनम के कीए। सो जाणै जिन दातै दीए।।
किस कौ दोस देह तू प्राणी सहो अपणा कीआ करारा हे।।

गुरु नानक साहब प्यार से कहते हैं, "आज हम जो सुख दुख भोग रहे हैं, गरीब हैं या अमीर हैं यह हमारे अपने ही कर्मों की वजह से हैं। अगर हम गरीब हैं तो हमें सब्र से भोग लेना चाहिए अगर अमीर हैं तो शुक्र करके भोग लेना चाहिए अगर बीमार हैं तो भी भाणा मानना चाहिए कि हमें बुरे कर्मों की सजा मिल रही है। हम मालिक के सामने

लम्बी–चौड़ी अरदासें करते हैं। परमात्मा ने सिर्फ एक देवता बिठा दिया है जो जैसा करता है वैसा ही भरता है।"

हौमैं ममता करदा आया। आसा मनसा बंध चलाया।।
मेरी मेरी करत क्या ले चाले बिख लादे छार बिकारा हे।।

जिस जन्म में भी गया मेरी–मेरी करता हुआ अहंकार करता हुआ चलता आया है। अहंकार की गठरी बाँधकर लाया है कि मैं आलम–फाजल हूँ, मैं धनवान हूँ, मैं सबसे अच्छा हूँ।

हर की भगति करो जन भाई। अकथ कथो मन मनेंह् समाई।।
उठ चलता ठाक रखो घर अपनै दुख काटे काटणहारा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, "हरि की भक्ति को ब्रह्मा, विष्णु, शिव और देवी–देवता भी लोचते हैं। उस परमात्मा राम की भक्ति करें वह **रमत राम** है। वह आपके जन्म–मरण के दुख कलेश काट देगा।"

हर गुर पूरे की ओट पराती।। गुरमुख हर लिव गुरमुख जाती।।
नानक राम नाम मत ऊतम हर बखसे पार उतारा हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, "जब परमात्मा कृपा करता है तब हम पूरे गुरुओं की शरण में जाते हैं उनका आसरा रखते हैं। गुरु हमारी लिव राम परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं और हम भवसागर से पार हो जाते हैं, अपने घर चले जाते हैं। परमात्मा ने हमें जिस घर से आँखों के पीछे पर्दा लगाकर बाहर निकाल दिया था आज तक हम बाहर ही बाहर रहे। गुरुमुखों ने हमें सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर उस नाम के साथ जोड़ दिया, हम अपने घर पहुँच गए।"

पहले हम एक तोते की तरह जुबानी राम–राम करते हैं। वह **रमत राम** सबके अंदर समाया हुआ है सन्त उसे घट–घट का वासी कहते हैं। वह राम पत्ते–पत्ते में व्यापक है। जब हम उसे अपने अंदर देख लेते हैं फिर पता लगता है कि वह राम चिड़िया के अंदर भी है हाथी के अंदर भी है भेड़ बकरी और इंसान के अंदर भी है। किसी भी सन्त ने माँस की वकालत नहीं की। सभी सन्तों ने कहा है:

निर्दया नाहीं जोत उजाला।

गुरु साहब कहते हैं, "जो लोग किसी का माँस खाते हैं उनके अंदर जोत प्रकट नहीं होती। जीवन तो हर एक को प्यारा है। आप देखें! सुअर की योनि सबसे बेकार है जब लोग उसे मारने के लिए पकड़ते हैं तो वह बेचारा किस तरह दौड़ता है चीं–चीं करता है। अपनी आवाज में फरियाद करता है वह कौन सी अदालत में जाए? हो सकता है किसी समय में वह भी अच्छा सेठ साहूकार हो।"

भाई गुरदास जी एक मिसाल देकर कहते हैं कि एक बार शेर बकरी को खाने लगा तो बकरी खिल खिलाकर हँसी। शेर ने बकरी से पूछा, "तू क्यों हँस रही है?" बकरी ने कहा, "हम घास फूँस खाने वालों की यह हालत है तो जो हमें खाएंगे उनकी क्या हालत होगी?" कबीर साहब कहते हैं:

बकरी पाती खात है ताकी काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात है तिनके कवन हवाल।।

गुरु नानक साहब ने इस छोटे से शब्द में प्यार से समझाया है कि परमात्मा हमें घर से निकालकर बज्र किवाड़ लगाकर बैठ गया है। मन

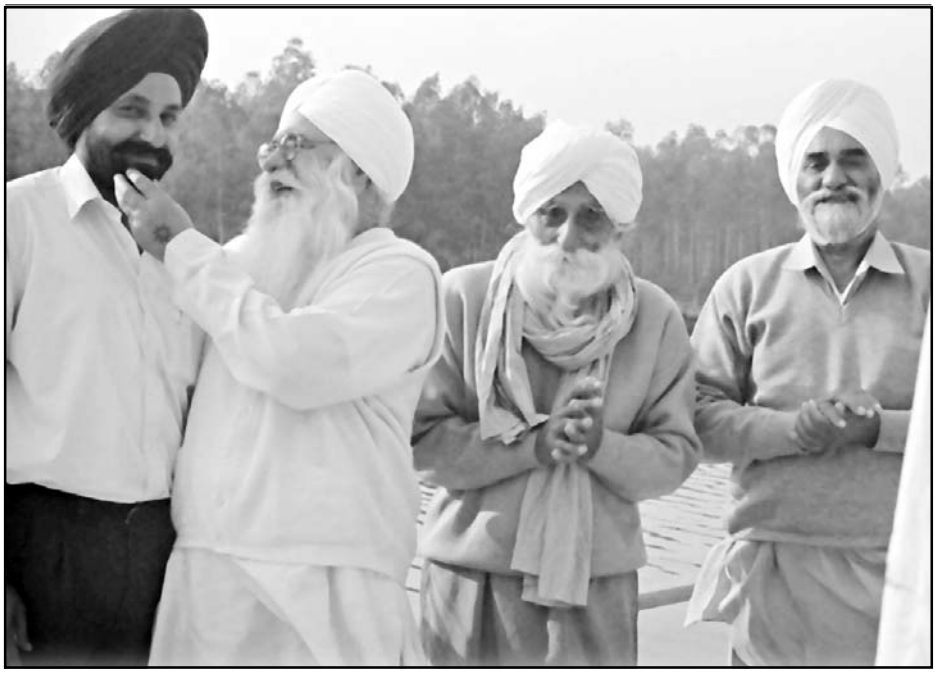

हमें बाहर की ओर ही लेकर फिरता है। हम जप करते हैं तो भी बाहर हैं, तप करते हैं तो भी बाहर हैं, पूजा पाठ करते हैं तो भी बाहर घूमते रहते हैं। हम आज तक अपने घर नहीं गए।

गुरु नानक साहब ने हमें हर पहलू से समझाकर आखिर में यही संदेश दिया है अगर आप गुरुमुखों के जरिए परमात्मा की दया से 'शब्द–नाम' के साथ लिव लगा लेंगे तो वापिस अपने घर आ जाएंगे।

परमात्मा ने दया करके हमे अनमोल हीरा इंसान का जामा दिया है। हमें चाहिए इसमें बैठकर हम उस राम परमात्मा की भक्ति करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

09.01.1995

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

अमृतवेला

आ जा आ जा आ जा मेरे कृपाल जी दुखियां दे सहारे।

परमात्मा ने अपनी अपार दया करके हमें बहुत सुहावना इंसानी जामें का मौका दिया है। हम इंसानी जामें का फायदा तभी उठा सकते हैं अगर हम परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा हमारे अंदर है हम अंदर जाकर ही परमात्मा से मिलें।

जिन महात्माओं ने आत्मा और परमात्मा के बारे में खोज की है उनके अंदर बहुत अटल विश्वास होता है। वे इस तरह की सहज अवस्था प्राप्त कर लेते हैं कि दुनिया की मान-बड़ाई और आदर उनकी खुशी का कारण नहीं बनता; दुनिया की निन्दा उनकी गमी का कारण नहीं बनता। उन्हें परमात्मा पर अटल विश्वास होता है कि परमात्मा के हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। वे निडर हो जाते हैं सिर्फ परमात्मा से ही डरते हैं क्योंकि वह उनका मालिक होता है। वे दुनिया को बड़ा नहीं समझते परमात्मा को बड़ा समझते हैं। वे परमात्मा के नाम में सब कुछ प्यार से सह लेते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''मानस जन्म कीमती हीरा है, यह बार-बार नहीं मिलता। जिस तरह एक बार फल पककर जमीन पर गिर जाए तो वह फल दोबारा डाली पर नहीं लगता इसी तरह अगर हम एक बार इंसानी जामें का मौका खो देते हैं तो बार-बार यह मौका नहीं मिलता।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम दिन को खेलने में और रात को सोने में बर्बाद कर देते हैं। इंसान का जामा हीरा है विषय-विकार कोड़ियां हैं। हम इन कोड़ियों को प्राप्त करने में ही इस

इंसानी जामें को खोकर चले जाते हैं। दुनिया से प्राप्त करने वाली कीमती चीज़ परमात्मा की भक्ति और परमात्मा का प्यार है। परमात्मा की भक्ति हम बाजार से नहीं खरीद सकते, खेतों में उगा नहीं सकते; किसी हुकूमत के बल से भी प्राप्त नहीं कर सकते।''

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँचों डाकू इंसान को बंदर की तरह नचा रहे हैं, हर आत्मा को अपने बस में कर रहे हैं। इनसे छूटने का उपाय शब्द-नाम की भक्ति, गुरु की शरण है। गुरु के साथ प्यार होने से हमारा संपर्क नाम के साथ हो जाता है। नाम प्रकट होने से ये पाँचों दुश्मन हमारा पीछा छोड़ देते हैं।

सारी दुनिया सच्चा सुख, शान्ति और मान-बड़ाई की खातिर भाग रही है। दुनिया की मान-बड़ाई के पीछे बहुत दुख छिपे होते हैं। दुनिया, मान बड़ाई देने और छीनने में भी समय नहीं लगाती लेकिन सच्चा सुख, सच्ची इज्जत परमात्मा के घर पहुँचने में ही है। परमात्मा जिसे एक बार प्यार और आदर-मान बख्श देता है फिर छीनता नहीं। जिसने भक्ति का धन प्राप्त करना है उसके लिए जरूरी है कि वह मालिक के प्यारों से सच्चे दिल से प्यार करे लेकिन प्यार दिखावे का न हो।

जिन्होंने भक्ति का धन प्राप्त किया होता है वे परमात्मा के खास नुमाइंदे होते हैं। परमात्मा ने उन्हें अपना आर्शिवाद दिया होता है वहाँ परमात्मा प्रकट होता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुर का ध्यान धर प्यारे बिना इस नहीं छुटना।

जब तक हम ऐसे महात्मा के साथ सच्चे दिल से प्यार-मौहब्बत नहीं करते तब तक हम मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आ सकते, हमारे अंदर परमात्मा का प्यार नहीं जाग सकता।

हमें जिस वस्तु की खोज है जिस वस्तु की खातिर दुनिया जंगलों-पहाड़ों में फिरती है और मंदिरों-मस्जिदों में चक्कर लगा रही है वह वस्तु हमारे अंदर हमारी इंतजार में है। अगर हमारे दिल में परमात्मा से मिलने के लिए सच्चा प्यार सच्ची तड़प है तो हमें बाहर से ख्याल हटाकर अपने अंदर जाना चाहिए। हमें अंदर जिसकी खोज है वह हमें जरूर मिल जाता है, हम शान्ति प्राप्त कर लेते हैं; हमारी भटकना मिट जाती है। जो मन हमें हिरन की तरह दुनिया के पदार्थों के लिए भटकाता है फिर वह मन टिक जाता है, अपने घर बैठ जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

राम नाम मन बेधया अवर की करी विचार।

भीखा साहब अपनी बानी में कहते हैंः

भीखा बात अगम की, कहन सुनन में नाहें।
जो जाणें सो कहे ना, कहे सो जाने नाहे।।

यह तो करने का मसला है, जो करते हैं वे प्राप्त कर लेते हैं। जो प्राप्त कर लेते हैं वे दुनिया को महात्मा बनकर या किसी किस्म का पाखंड करके नहीं दिखाते। वे दिल से और बाहर से भी सच्चे हैं। जो जानते हैं वे कहते नहीं, जो नहीं जानते वे जरूर लोगों को इश्तिहारबाजी करके दिखाते हैं कि आओ! हम आपको जोत, भगवान दिखाएंगे। भोली-भाली जनता करने पर जोर नहीं देती लेकिन जिन्होंने प्रेक्टिकल किया होता है वे मालिक के प्यारे कहते हैं, ''सज्जनों! सन्तमत अपने आपको सुधारने का मत है, यह करने का मत है दिखावे का मत नहीं।''

बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान नहीं देना। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना प्रेम-प्यार से करना है।

***

धन्य अजायब

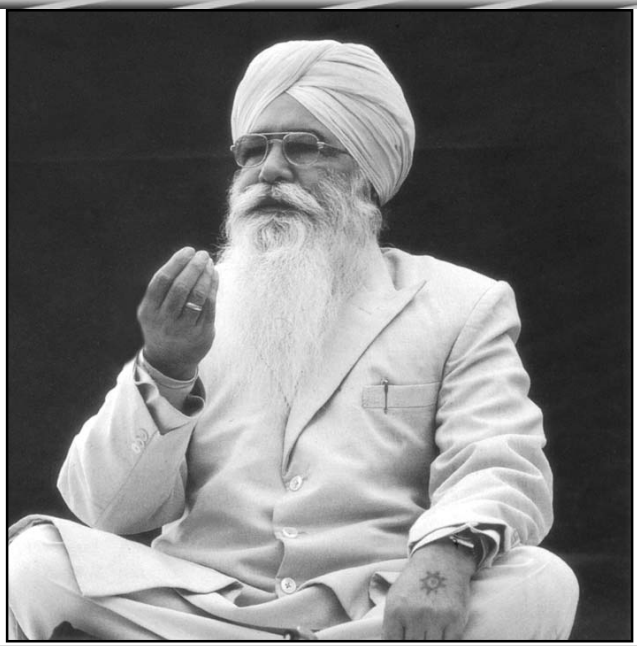

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 4 से 8 जनवरी 2017 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन, शान्तिलाल मोदी मार्ग
(नजदीक मयूर सिनेमा), कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067
☎ 98 33 00 4000, व 022–24965000

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

23 से 25 दिसम्बर 2016
02 से 06 फरवरी 2017